प्रातः क्लास 5/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। अभी रूहानी यात्रा को तो तुम बच्चे अच्छी तरह समझते हो। कोई भी हठयोग की यात्रा हो.. नहीं। यह है याद। याद के लिए कोई भी तकलीफ की बात नहीं। बाप को याद करना इसमें कोई तकलीफ की बात नहीं है। ..... यह क्लास है इसलिए सिर्फ कायदे से बैठना होता है। तुम तो बच्चे हो। बच्चों की पालना हो रही है। कौन सी पालना? अविनाशी ज्ञान रत्नों का खज़ाना मिल रहा है। बाप को याद करने में कोई तकलीफ नहीं है। सिर्फ माया बुद्धि का योग तोड़ती है। बाकी भल बैठो कैसे भी। उनसे कोई याद का कनेक्शन नहीं। बहुत बच्चे हठयोग से 3/4 घंटे बैठते हैं, सारी रात भी बैठ जाते हैं। आगे तुम्हारी तो भट्ठी थी। वह बात और थी। वहाँ तुमको कोई धंधा-धोरी तो था नहीं। इसलिए यह सिखाया जाता था। अभी बाप कहते हैं तुम गृहस्थ व्यवहार में रहो। धंधा-धोरी आदि भी भल करो। कुछ भी काम-काज करते बाप को याद करना है। ऐसे भी नहीं कि अभी निरंतर तुम याद कर सकते हो। नहीं। इस अवस्था में टाइम लगता है। अभी ही निरंतर याद ठहर जाये तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। बाप समझाते हैं बच्चे ड्रामा के प्लैन अनुसार अभी बाकी थोड़ा समय है। सारा हिसाब भी बुद्धि में रहता है। कहते हैं क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले भारत ही था। उनको स्वर्ग कहा जाता था। अभी उन्हों की 2000 वर्ष भी पूरे होते हैं। तो 5000 वर्ष का हिसाब हो जाता है। देखा जाता है तुम्हारा सारा नाम विलायत से ही निकलेगा; क्योंकि उन्हों की बुद्धि फिर भी भारतवासियों से तीखी है। भारत में शांति भी वह माँगते हैं। भारतवासियों ने ही लाखों वर्ष देकर और सर्वव्यापी का ज्ञान देकर सभी की बुद्धि बिगाड़ दी है। तमोप्रधान बन गये हैं। वह इतने तमोप्रधान नहीं बने हैं। उन्हों की बुद्धि तो बड़ी तीखी है। भारतवासियों से तो वह झट समझ जावेंगे। उन्हों का जब आवाज़ निकलेगा तब भारतवासी जागेंगे; क्योंकि भारतवासी एकदम घोर नींद में सोये हुये हैं। वह थोड़े सोये हुये हैं। आवाज़ उन्हों का अच्छा निकलेगा। विलायत से आये भी थे, हमको कोई बतावें पीस कैसे हो सकती है; क्योंकि बाप भी भारत में ही आते हैं। यह बात तो तुम बच्चे ही बता सकते हो। दुनिया में फिर से वह पीस कब और कैसे होगी तुम बच्चे जानते हो; परंतु किसको समझाने की वह ताकत नहीं है। विलायत वाले भल तुम्हारे म्युज़ियम आदि में आते हैं; परंतु समझाने की ताकत नहीं है। बाबा ने कहा था उन्हों को कैसे लिखकर देना चाहिए, वह लिखकर आना; परंतु कोई ने भी लिखा नहीं है। ज्ञान की पराकाष्ठा तो है नहीं। कलकत्ते में चांस अच्छा मिला, पर कोई ने भी कायदे सिरे समझाया नहीं। तुम बच्चे तो जानते हो बरोबर पैराडाइज़ अथवा हेविन था। नई दुनिया में भारत पैराडाइज़ था। यह और कोई भी नहीं जानते। मनुष्यों की बुद्धि में यह बात ही बैठ गई है कि ईश्वर सर्वव्यापी है और कल्प की आयु भी लाखों वर्ष कह दिया है। सबसे जास्ती पत्थर बुद्धि यह भारतवासी ही बने हैं। यह गीता शास्त्र आदि सभी हैं भक्तिमार्ग के। फिर भी यह सभी ऐसे ही बनेंगे। भल ड्रामा को जानते हो; परंतु फिर भी बाप तो पुरुषार्थ कराते हैं। तुम बच्चे जानते हो विनाश तो ज़रूर होना ही है। बाप आये ही हैं नई दुनिया की स्थापना करने। तो यह खुशी की बात है ना। जब कोई बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो अंदर में खुशी होती है ना, हम पास कर यह जाकर बनेंगे। सारा मदार पढ़ाई पर है। तुम बच्चे जानते हो बरोबर हमको बाप पढ़ाकर यह बनाते हैं। बरोबर पैराडाइज़, हेविन था। मनुष्य तो बिचारे बिल्कुल ही मूँझे हुये हैं। बेहद के बाप के पास जो ज्ञान है वह तुम बच्चों को दे रहे हैं। बाप की भी तुम (महिमा) करते हो ना। बाबा नॉलेजफुल है। फिर विलीसफुल भी है। खज़ाना भी उनका फुल है। तुमको इतना साहूकार कौन बनाता है, तुम जानते हो। यहाँ तुम क्यों आये हो? यह वर्सा पाने। अगर कोई की तन्दरुस्ती अच्छी है; परंतु धन नहीं है तो धन बिगर क्या होगा। बैकुण्ठ में तुम्हारे पास बहुत धन रहता है। यहाँ जो-जो साहुकार हैं उनको नशा रहता है हमारे पास इतना धन है। यह बड़े-2 कारखाने हैं। शरीर छोड़ा, खलास। तुम तो जानते हो हमको बाबा 21 जन्मों लिए इतना खज़ाना दे देते हैं। बाप खुद तो खज़ाने का मालिक नहीं बनते हैं, तुम बच्चों को मालिक बनाते हैं। यह भी तुम जानते

विश्व में शांति सो तो सिवाय गॉड फादर के कोई स्थापन कर न सके। सभी से फर्स्ट क्लास चित्र है यह त्रिमूर्ति, गोले का। इस चक्र में ही सारा ज्ञान भरा हुआ है; परंतु यह भी बहुत बड़ा होना चाहिए। इनमें कितनी नॉलेज है। तुम्हारी कोई ऐसी वण्डरफुल चीज़ होगी तब वह भी समझेंगे इसमें ज़रूर कोई ऐसा राज़ है। चक्र तो इससे बहुत बड़ा बनाना पड़े। बच्चे छोटे खिलौने बनाते हैं। वह बाबा को पसंद नहीं आती। बाबा तो कहते हैं बड़े-2 चित्र लगाओ, जो दूर से ही कोई पढ़, समझ सके। मनुष्य अटेन्शन बड़ी(ी) चीज़ पर ही देंगे। इसमें क्लीयर कर दिखाया हुआ है, उस तरफ है कलियुग, इस तरफ है सतयुग। बड़े-2 चित्र होंगे तो मनुष्यों का अटेन्शन खिंचेगा। ट्यूरेस्ट भी देखें। समझेंगे वह भी अच्छी तरह से। यह भी जानते हैं क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले स्वर्ग था। भारतवासी तो कुछ भी नहीं जानते हैं। 5000 वर्ष का हिसाब तुम क्लीयर कर समझाते हो। तो यह इतना बड़ा बनाना चाहिए जो कोई भी दूर से देख सके और अक्षर भी पढ़े और समझे कि दुनिया का अंत तो बरोबर है। बॉम्स भी तैयार होते रहते हैं। नेचरल कैलेमिटीज़ भी होगी। तुम विनाश का नाम सुनते हो तो अंदर में खुशी बहुत होनी चाहिए; परंतु ज्ञान ही नहीं होगा तो वह खुशी भी हो न सके। बाप कहते हैं देह सहित सभी कुछ छोड़ कर अपन को आत्मा समझो। अपने आत्मा का योग मुझ अपने बाप के साथ लगाओ। यह है मेहनत की बात। पावन बनकर ही पावन दुनिया में जाना है। तुम समझते हो हम ही बादशाही लेते हैं, फिर गंवाते हैं। यह तो बहुत ही सहज है। उठते-बैठते अंदर में ज्ञान टपकना चाहिए। जैसे बाबा के पास भी ज्ञान है ना। बाप आये ही हैं पढ़ाकर देवता बनाने। तो इतनी अथाह खुशी बच्चों को रहनी चाहिए ना। अपने से पूछो इतनी अथाह खुशी है? बाप को इतना याद करते हैं? चक्र का भी सारा नॉलेज बुद्धि में है? तो इतनी खुशी रहनी चाहिए ना। बाप कहते हैं मुझे याद करो और बिल्कुल खुशी में रहो। तुमको पढ़ाने वाला देखो कौन है। जब सभी को मालूम पड़ेगा तो सभी का मुँह ही फीका हो जावेगा; परंतु उन्हों को अभी समझने में देरी है। अभी देवता धर्म की इतनी मेम्बर्स तो बने नहीं हैं। सारी राजाई तो स्थापन हुई नहीं है। कितने ढेर मनुष्यों को बाप का पैगाम देना है। बेहद का बाप हमको फिर से स्वर्ग की बादशाही दे रहे हैं। तुम भी उस बाप को याद करो। बेहद का बाप तो ज़रूर बेहद का सुख देंगे ना। बच्चों की बुद्धि में तो अथाह ज्ञान की खुशी होनी चाहिए और जितना-2 बाप को याद करते रहेंगे तो आत्मा पवित्र बन जावेगी ड्रामा के प्लैन अनुसार। तुम बच्चे जितना सर्विस कर प्रजा बनाते हो, जिनका कल्याण होता है उन्हों की फिर आशीर्वाद भी मिलती जाती है। गरीबों की सर्विस करते रहो, निमंत्रण देते रहो। ट्रेन में भी तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। इतनी छोटी बैज में ही कितनी नॉलेज भरी हुई है! सारी पढ़ाई का तंत इनमें है। बैजेज़ तो बहुत अच्छे-2 ढेर बनानी चाहिए, जो किसको सौगात भी दे सकें। कोई को भी समझाना तो बहुत ही सहज है। सिर्फ शिवबाबा को याद करो। शिवबाबा से यह वर्सा मिलता है। तो बाप और बाप का वर्सा, स्वर्ग की बादशाही, कृष्ण पुरी को याद करो। मनुष्यों की मत तो कितनी मूँझी हुई है। कुछ भी समझते नहीं हैं; परंतु कोई लज्जा कम थोड़े ही आती है। इस समय मनुष्य कितने पत्थर बुद्धि, बंदर बुद्धि बन पड़े हैं, जैसे कि कामी कुत्ते हैं। विकार के लिए कितना तंग करते हैं। काम के पिछाड़ी कितना मरते हैं। कोई बात ही नहीं समझते हैं। जैसे चर्यों की हॉस्पिटल होती है ना, जिसको मेन्टल हॉस्पिटल कहते हैं। इस समय यह सारी दुनिया बड़ी ते बड़ी मेंटल हॉस्पिटल है। सभी की बुद्धि बिल्कुल जट हो गई है। बाप को जानते ही नहीं। यह भी ड्रामा में नूँध है। सभी की मेंटल(बुद्धि) खलास हो गई है। बाप कहते हैं–बच्चो, तुम पवित्र बनो तो ऐसे स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे; परंतु समझते ही नहीं हैं। आत्मा की ताकत सारी निकल गई है। कितना समझाते हैं। तो भी समझते नहीं हैं। नशा नहीं चढ़ता। टाइम भी पड़ा है। फिकरात की कोई बात नहीं है। फिर भी पुरुषार्थ करना और कराना है। पुरुषार्थ में थकना नहीं है। हार्ट फेल भी नहीं होता है। इतनी मेहनत क... भाषण की, भाषण से एक भी नहीं निकला। नहीं। जिसने जो सुना है वह छापा लग जाता। पिछाड़ी में सभी जागेंगे ज़रूर। तुम ब्रह्माकुमारियों की अथाह महिमा निकलने वाली है; परन्तु

एक्टीविटी देखते हैं तो जैसे कि एकदम बेसमझ का। कोई रिगार्ड ही नहीं। पूरी पहचान ही नहीं। बुद्धि बाहर भटकती रहती है। बाप को याद करे तो मदद भी मिले। बाप को याद नहीं करते हैं तो गोया वह पतित हैं। तुम बनते हो पावन। फर्क देखो कितना है। बाप को खुद याद नहीं करते हैं, उन्हों की बुद्धि ज़रूर कहाँ न कहाँ भटकती होगी। तो उनके साथ अंग से अंग न मिलनी चाहिए; क्योंकि याद में न रहने कारण वह वायुमण्डल को खराब कर देते हैं। पवित्र और अपवित्र इकट्ठे रह न सके। इसलिए बाप पुरानी सृष्टि को खलास कर देते हैं। दिन प्रतिदिन कायदे भी कड़े निकलते जावेंगे। बाप को याद नहीं करते हैं तो फायदे बदली और ही नुकसान हो जाता है। पवित्रता का सारा मदार याद पर है। एक जगह बैठने की भी बात नहीं है। यहाँ इकट्ठा बैठने से तो अलग-2 पहाड़ों पर जाकर बैठे वह अच्छा है। जो याद नहीं करते हैं वह हैं पतित। उनका तो संग ही छोड़ देना चाहिए। चलन से सब मालूम पड़ता है। याद बिगर पावन तो बन न सके। हरेक के ऊपर पापों का बोझा बहुत है जन्म-जन्मांतर का, वह बिगर याद की यात्रा कैसे निकलेगी। तो गोया वह पतित ही हैं। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों के लिए सारी दुनिया को खलास कर देता हूँ। उनका संग भी छोड़ देना चाहिए; परंतु इतनी भी बुद्धि नहीं कि किसके साथ संग करना चाहिए। तुम्हारा प्यार पावन का पावन के साथ होना चाहिए। यह भी बुद्धि चाहिए ना। स्वीट बाप और स्वीट राजधानी के साथ योग हो और कोई की याद न हो। इतना सभी त्याग करना कोई मासी का घर नहीं है। बाप का तो बच्चों पर अथाह प्यार है। बच्चे पावन बन जाओ तो तुम पावन दुनिया के मालिक बन जावेंगे। हम तुम्हारे लिए पावन दुनिया स्थापन कर रहे हैं। इस पतित दुनिया को बिल्कुल ही खलास कर देते हैं। इस पतित दुनिया में तुमको हर चीज़ दुःख ही देते हैं। आयु भी कमती होती जाती है। इनको कहा जाता है वर्थ नॉट ए पैनी। कौड़ी और हीरे में फर्क तो होता है ना। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। गाया भी जाता है सच्च तो बिठो नच। तुम सतयुग में खुशी में डांस करते हो। यहाँ की कोई भी वस्तु से दिल नहीं लगानी है। इनको तो देखते हुये भी न देखना है; परंतु वह हिम्मत, अवस्था चाहिए। यह तो निश्चय है यह पुरानी दुनिया होगी ही नहीं। आँखें खुली हुई ऐसी होती है जैसे कि बंद हो। इतना खुशी का पारा चढ़ा हुआ रहना चाहिए। हम अपनी राजधानी में जावेंगे। भक्तिमार्ग में भी भक्ति करते-2 बुद्धि और तरफ चली जाती थी तो अपन को चमाट मारते थे। अभी बाप को याद नहीं किया जाता है तो क्या करना चाहिए? चुनरी पहननी चाहिए। अगर हम शिवबाबा को याद करेंगे तो विश्व की बादशाही मिलेगी। हठयोग से भी बैठना न है। खाते-पीते, काम करते बाप को याद करो। यह भी जानते हो राजधानी स्थापन हो रही है। बाप थोड़े ही कहेंगे कि दासी बने। बाप तो कहेंगे पुरुषार्थ कर पावन बनो। बाप पावन बनने का पुरुषार्थ कराते, तुम फिर पतित बनते हो! कितने झूठ पाप करते हो। हमेशा शिवबाबा को याद करते रहो, तो पाप सभी भस्म हो जायें। यह बाबा का यज्ञ है ना। बड़ा भारी यज्ञ है। वह लोग यज्ञ रचते हैं, लाखों रुपया खर्चा करते हैं। यहाँ तो तुम जानते हो सारी दुनिया इनमें स्वाहा होनी है। भारत की बुद्धि चट खाते में है। बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि। इसलिए बाहर में आवाज़ होगा। भारत में भी फैलेगा। एक तो बाप के साथ बुद्धि का योग हो तो पाप कटे और फिर ऊँच पद भी मिले। बाप का तो फर्ज है बच्चों को पुरुषार्थ कराना। लौकिक बाप तो बच्चों की सेवा कर फिर सेवा लेते भी हैं। यह बाप तो कहते हैं तुम सुखी हो ना। हमें सुखी होना नहीं है। मैं आता ही हूँ तुम्हारे लिए, ड्रामा अनुसार तुम बच्चे जानते हो हमको 21 जन्मों का वर्सा बाप देते हैं। उनको तो याद ज़रूर करना है, तो पाप कटे। बाकी पानी से थोड़े ही पाप कटनी है। पानी तो जहाँ-तहाँ है। विलायत में भी नदियाँ हैं तो क्या यहाँ की ही नदियाँ पावन बनाने वाली हैं? विलायत की नदियाँ पावन बनाने वाली नहीं है क्या? कुछ भी मनुष्यों में समझ नहीं है। बाप को तो तरस पड़ता है ना। बाप समझाते हैं बच्चे गफलत मत करो। बाप इतना गुल-2 बनाते हैं तो मेहनत करनी चाहिए ना। अपन पर रहम करना है। अच्छा, मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।